पाठ 9. मुकदमा हवा-पानी का

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं स्वच्छता हेतु जागरूक करना है। हमें पर्यावरण को दूषित नहीं करना चाहिए। हवा और पानी को स्वच्छ रखना हम सभी का कर्तव्य है। हमें कूड़ा-कचरा इधर-उधर नहीं फेंकना चाहिए।

पाठ का सारांश

यह पाठ नाटक विधा में रचित है। महाराज के दरबार में लोग हवा और पानी की शिकायत करने आते हैं। मुकदमे की कार्रवाई हेतु पहले पानी को बुलाया जाता है। लोगों की शिकायत है कि पानी अब निर्मल नहीं रहा। इसके कारण गाँवों में बाढ़ आ जाती है। पानी अपनी सफ़ाई देते हुए इसका ज़िम्मेदार लोगों को ही बताता है। लोगों की शिकायत हवा से भी है। वे महाराज से कहते हैं कि हवा में अब खुशबू नहीं है वह चारों ओर बदबू फैलाती है। हवा की बदबू से जीना मुश्किल हो गया है। वह आँधी बनकर घरों में रेत और कूड़ा भर देती है। हवा अपने बचाव में कहती है कि लोग ही कूड़ा गली में या सड़क पर फेंक देते हैं। वही कूड़ा उड़कर वापस लोगों के घरों में चला जाता है। इसमें उसका दोष नहीं है। सबकी बात सुनने पर महाराज ने कहा कि लोगों को सफ़ाई की आदत अपनानी चाहिए। हवा और पानी को अपना दोस्त समझना चाहिए तथा इन्हें दूषित नहीं करना चाहिए।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पहले **पठन-पूर्व चर्चा** में पूछे प्रश्नों पर चर्चा करें। पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से पाठ के एक-एक अंश का वाचन करवाएँ। पाठ के कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ। बच्चों से पाठ के मूल भाव या संदेश के बारे में पूछें। उन्हें पर्यावरण की उपयोगिता से अवगत कराएँ। बच्चों से इस पाठ का अभिनय करवाएँ।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–

- बच्चों से पूछें, पर्यावरण संरक्षण क्यों आवश्यक है?
- वर्तमान युग में वे प्रकृति में क्या-क्या बदलाव देख रहे हैं?
- हवा और पानी की हमारे जीवन में क्या उपयोगिता है?
- पर्यावरण संरक्षण के लिए क्या-क्या उपाय किए जा सकते हैं?

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।